

स्वयं में व्यवस्था

स्वयं में अध्ययन

1. अध्ययन वस्तु:

a. चाहना - लक्ष्य

सुख, समृद्धि → निरंतरता

b. करना - कार्यक्रम

सुख = संगीत में, व्यवस्था में जीना



व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना

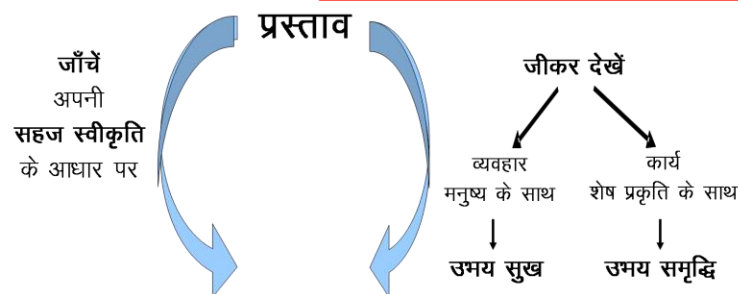
1. मानव में व्यवस्था

2. परिवार में व्यवस्था

3. समाज में व्यवस्था

4. प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था

2. अध्ययन विधि



Human Being

मानव

Self (I)
मैं

Co-existence

सहअस्तित्व

Body

शरीर

Need आवश्यकता	Happiness (e.g. Respect) सुख (जैस सम्मान)	Physical Facility (e.g. Food) सुविधा (जैसे भोजन)
In Time काल में	Continuous निरन्तर	Temporary सामयिक
In Quantity मात्रा में	Qualitative (is Feeling) गुणात्मक (भाव है)	Quantitative (Required in Limited Quantity) मात्रात्मक (सीमित मात्रा में)
Fulfilled By पूर्ति के लिए	Right Understanding & Right Feeling सही समझ, सही भाव	Physio-chemical Things भौतिक-रासायनिक वस्तु
Activity क्रिया	Desire, Thought, Expectation... इच्छा, विचार, आशा...	Eating, Walking... खाना, चलना...
In Time काल में	Continuous निरन्तर	Temporary सामयिक
Response	Knowing, Assuming, Recognising, Fulfilling जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना	Recognising, Fulfilling पहचानना, निर्वाह करना

Consciousness चैतन्य

Material जड़

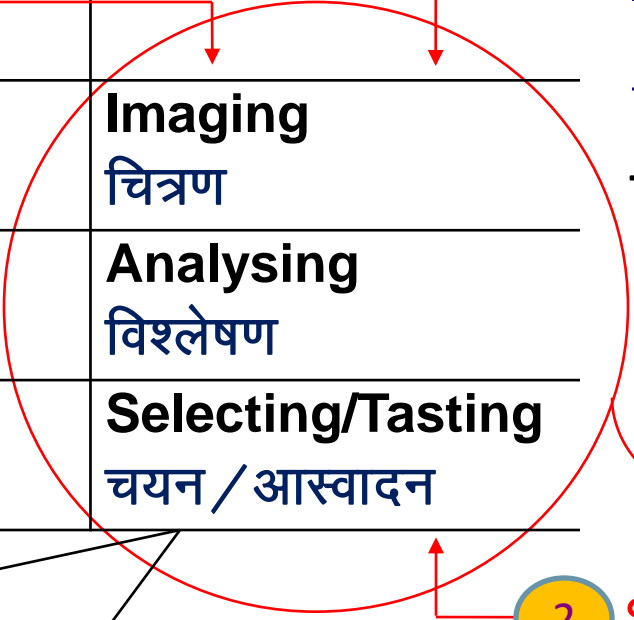
Activities of Self (I) मैं की क्रियायें

	Force / Power बल / शक्ति	Activity क्रिया	
Self (I) मैं	1.		Self verification on the basis of Natural Acceptance
Preconditioning	2.		सहज स्वीकृति के आधार पर जांच कर स्वतंत्रता ✓
मान्यता	3. Desire इच्छा	Imaging चित्रण	Imagination कल्पनाशीलता
परतंत्रता X	4. Thought विचार	Analysing विश्लेषण	
	5. Expectation आशा	Selecting/Tasting चयन / आस्वादन	
Body शरीर			2. Sensation स्वेदना परतंत्रता X
	Behaviour व्यवहार	Work कार्य	

1

3

2



प्रयोग – इच्छाओं की सूची

अपनी इच्छाओं की सूची बनाएं

उन्हें विभक्त करें :-

- मैं और शरीर की आवश्यकता के आधार पर
- कहाँ से आ रही हैं— मान्यता, संवेदना, सहज स्वीकृति के आधार पर

इच्छा, विचार, आशा (कल्पनाशीलता) की क्रियाएँ निरंतर हैं।

व्यवहार, कार्य कल्पनाशीलता के आधार पर होता है।

कल्पनाशीलता का आधार मान्यता, संवेदना या सहज स्वीकृति है।

सहज स्वीकृति के आधार पर कल्पनाशीलता निश्चित होती है। अतः व्यवहार, कार्य भी निश्चित होता है। यही स्वतंत्रता है।

मान्यता या संवेदना के आधार पर कल्पनाशीलता निश्चित नहीं होती है। अतः व्यवहार, कार्य भी निश्चित नहीं होता है। यही परतंत्रता है।